जयतु भारत

प्रकाशक

अखिल भारतीय राष्ट्रीय शैक्षिक महासंघ
शैक्षिक महासंघ सदन, 606/13,
कृष्णा गली नं.9, मौजपुर, दिल्ली-110053
दूरभाष एवं फेक्स-011-22914799

जयतु भारत

© सर्वाधिकार प्रकाशकाधीन

❖ प्रकाशन दिवस :
स्वामी विवेकानन्द जयन्ती
विक्रम संवत् 2068, युगाब्द 5113

❖ सहयोग राशि : 30 रुपये

❖ अक्षर संयोजन :
सागर कम्प्यूटर्स, जयपुर

❖ मुद्रक : **प्रीमियर प्रिन्टिग प्रेस, जयपुर**

❖ प्रकाशक :
अखिल भारतीय राष्ट्रीय शैक्षिक महासंघ

प्रकाशकीय

अखिल भारतीय राष्ट्रीय शैक्षिक महासंघ में तीन वर्ष में एक बार राष्ट्रीय अधिवेशन की योजना है। महासंघ का चतुर्थ त्रयवार्षिक राष्ट्रीय अधिवेशन 26, 27 व 28 अक्टूबर 2009 को केशव विद्यापीठ, जामडोली, जयपुर (राज.) के आवासीय विद्यालय एवं छात्रावास परिसर में सम्पन्न हुआ। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के प.पू. सरसंघचालक माननीय मोहनराव भागवत द्वारा राष्ट्रीय अधिवेशन के उद्घाटन सत्र में मुख्य अतिथि के रूप में देश भर से आये 209 जिलों एवं 21 राज्यों के प्रमुख कार्यकर्त्ताओं का मार्गदर्शन किया तथा राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सहसरकार्यवाह माननीय सुरेश सोनी जी का समापन उद्बोधन शिक्षक कार्यकर्त्ताओं के हृदय को छूने वाला रहा।

अधिवेशन में संवर्गानुसार, दायित्वानुसार बैठकों के साथ शिक्षकों के मध्य विभिन्न नये-नये उपजने वाले विषयों के स्पर्श हेतु खुला सत्र, संगठनात्मक, कर्त्तव्य प्रेरक कार्यकर्त्ता, कार्यव्यवहार, प्रवास, भविष्यगत कार्ययोजना जैसे विषयों को भी विशद् रूप से सभी के समक्ष रखा गया। इसी प्रकार दो विचारात्मक समसामयिक विषय 'सच्चर का सच' श्री राकेश सिन्हा (एसोसियेट प्रोफेसर, दिल्ली विश्वविद्यालय) ने तथा 'शिक्षा में विदेशी शिक्षण संस्थानों का प्रवेश' विषय डॉ. भगवती प्रकाश शर्मा (निदेशक, पेसेफिक इंस्टिट्यूट ऑफ मेनेजमेंट, उदयपुर (राज.) एवं वर्तमान में प्रो. वी.सी. पेसेफिक डीम्ड विश्वविद्यालय, उदयपुर राज.) ने प्रभावी ढंग से रखा। कार्यकर्त्ताओं के आग्रह पर चार भाषणों का समावेश करते हुए 'जयतु भारत' पुस्तक प्रकाशित करते हुए हमें अपार हर्ष है और हमें आशा ही नहीं पूर्ण विश्वास है इन चारों उद्बोधन से अधिवेशन में सम्मिलित न होने वाले तथा शिक्षा जगत में कार्यरत सभी प्रकार के कार्यकर्त्ताओं को प्रेरित कर, भारत में पूर्ववत शिक्षकीय जीवन एक आचार्य रूप में अभिव्यक्त कर भारत पुनः विश्व वंद्य बन संसार को मार्गदर्शन प्रदान करने में सक्षम बनेगा। ऐसे बीज वाक्यों के बार-बार पठन-पाठन से कार्य करने के पीछे के भावों को उद्वेलित कर कर्त्तव्यानुसार कार्य संपादित कर सकने में हम समर्थ सिद्ध हो सकें तो यह पुस्तक 'जयतु भारत' के प्रकाशन का सुफल प्राप्त होगा।

हम आभारी हैं 'ध्वनिमुद्रिका' सुनकर वाक्य लेखन करने, उसमें बार-बार संशोधन कर इसे पुस्तकाकार देने वाले जोधपुर (राज.) के शिक्षक श्री कृष्णगोपाल वैष्णव के, पुस्तक का सुन्दर कलात्मक मुख्य पृष्ठ एवं सुन्दर अक्षर संयोजन करने वाले सागर कम्प्यूटर, जयपुर (राज.) के तथा मुद्रक प्रीमियर प्रिंटिंग प्रेस, जयपुर के, जिनके समन्वित प्रयासों से यह हमें उपलब्ध हो सकी।

सुधी पाठकों के हाथों में 'जयतु भारत' पुस्तक सौंपते हुए हमें अपार हर्ष है कि यह पुस्तक शिक्षा क्षेत्र से जुड़े हुए सभी प्रकार के कार्यकर्त्ताओं को प्रेरित कर भारत के सम्पूर्ण व्यवस्था परिवर्तन की छटपटाहट को अभिव्यक्त कर समाधान की दिशा प्रदान करेगी। अस्तु।

-प्रकाशन समिति

अनुक्रम

1. **जयतु भारत** 5–18
   माननीय मोहनराव भागवत
   (प.पू.सरसंघचालक, रा.स्व.संघ)
2. **शिक्षा में विदेशी शिक्षण संस्थाओं का प्रवेश** 19–40
   डॉ. भगवती प्रकाश शर्मा
   (प्रो कुलपति, पेसेफिक डीम्ड विश्वविद्यालय, उदयपुर)
3. **सच्चर का सच** 41–56
   प्रो. राकेश सिन्हा
   (निदेशक, भारत नीति प्रतिष्ठान, दिल्ली)
4. **विषय नहीं, विद्यार्थी को पढायें** 57–72
   माननीय सुरेश सोनी
   (सह सरकार्यवाह, रा.स्व.संघ)

जयतु भारत

– माननीय मोहनराव भागवत

अखिल भारतीय राष्ट्रीय शैक्षिक महासंघ के सभी पदाधिकारी, सभी कार्यकर्तागण, उपस्थित नागरिक सज्जनों, माताओं, बहिनों।

आपने बहुत प्रेम व आदर से जो पगड़ी पहनाई उसको थोड़ा नीचे उतारकर मैं बोल रहा हूँ, क्योंकि उस पगड़ी को धारण करने लायक मस्तक का आकार होना चाहिये, नहीं तो बोलते समय मुंडी हिलेगी और पगड़ी अगर गिर जायेगी तो मेरी भी मानहानि होगी और जिस मान के साथ आपने उसको मुझे पहनाया है, उसका भी अपराध होगा। ऐसे ही अभी मुझे यहां पर बुलाया है, मैं तो जानवरों का डॉक्टर हूँ। ये तो ठीक है कि मैं राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ का सरसंघचालक हूँ और उस सरसंघचालक दायित्व पर ऐसे-ऐसे महानुभाव विद्यमान रहे हैं जो सभी क्षेत्रों में अपने ज्ञान की गति रखते थे, लेकिन अपने बारे में मेरी यह भ्रांत धारणा नहीं है कि मैं सभी क्षेत्रों का विद्वान हूँ और इसीलिये इस पगड़ी के जैसे ही उलझन उस बात को लेकर मेरे मन में थी कि शिक्षा के विषय पर बोलने के लिए शिक्षा के क्षेत्र में काम कर रहे लोगों के सामने जाकर भाषण क्या करूंगा, पगड़ी तो बड़े प्रेम और सम्मान के साथ दी है, लेकिन अपने सर का आकार उसके लायक नहीं है। अच्छा है कि भाषण शुरू करने से पहले उसको उतार दें और फिर बोलें, और इसलिये यह बात मैंने पहले ही बता दी है साफ-साफ।

यद्यपि मैं जानवरों का डॉक्टर हूँ, जानवरों के डॉक्टर रहने के लिए भी छात्र तो बनना ही पड़ता है, और छात्र बनते है तो आचार्यों को देखते ही हैं, और सार्वजनिक क्षेत्र में काम करते हैं तो सभी विषयों की चर्चा ध्यान में आती है। तो ये मेरी पूंजी है जिसके बल पर मैं आज आपके सामने बोलने के लिए खड़ा हूँ। तीसरी एक और बात है और वो मुख्य बात है जिसके लिए यह साहस मैं कर रहा हूँ कि मुझे बोलना है शैक्षिक महासंघ के कार्यकर्त्ताओं के सामने। उसकी अनेक विशेषताऐं हमारे महामंत्री, अध्यक्ष जी ने आपके सामने रखी है और आप भी जानते हैं। एक वाक्य अगर सारांश में कहना हो तो हमारा संगठन उल्टा चलने वाला संगठन है, धारा एक ओर बह रही है और हम धारा के विपरीत चल

रहे हैं। शिक्षकों का संगठन, वो क्या करता है, शिक्षकों की माँगों को लेकर लड़ता है, बिल्कुल सीधी-सादी सरल बात है और बहुत लोकप्रिय बात है। हमारी माँगें पूरी करो इस बात के लिए संगठन बनता है और वो अपने साथ चलता है तो सभी लोग उस संगठन का समर्थन करते हैं। इतना सीधा-सादा सरल व्यवहार है।

लेकिन हमने इसमें जोड़ दिया है राष्ट्रीय और शिक्षक नहीं रखा, इसको हमने बनाया शैक्षिक और इसको हमने यूनियन नहीं रखा, इसको हमने महासंघ संगठन बना दिया और इसके चलते यह सीधी-सादी सरल दुकान। ऐसी दुकान को चलाकर अन्य लोग अपना धन्धा बहुत अच्छा कर लेते हैं, उसको हमने एक बहुत कठिन कार्य में बदल दिया और उसको करने के लिए हम जा रहे हैं, यह हिम्मत का काम है।

मैं भी ऐसे ही एक संगठन में काम करता हूँ, जो धारा से ही उल्टा चलता है और इसलिए मुझे लगा कि सोच तो वही है और यह संगठन भी राष्ट्रीय है, हमारा संगठन भी राष्ट्रीय है और उस राष्ट्रीय संगठन के अनेक लोग यहाँ पर भी काम कर रहे हैं और इसलिए दृष्टि क्या होगी? सोचते क्या होंगे ? यह मैं जानता हूँ। ये सोच हमारी राष्ट्रीय सोच है। इसके दो अर्थ होते हैं एक तो हम काम कर रहे हैं शिक्षकों को साथ में लेकर, शिक्षकों के क्षेत्र में तो ज्यादा से ज्यादा आदमी सोचेगा तो शिक्षकों के आगे जाकर पूरी शिक्षा की सोचेगा। लेकिन हम कहते हैं हम वहाँ तक मर्यादित नहीं हैं, हमारा राष्ट्रीय सोच वाला काम है और हमने शिक्षकों का काम प्रारम्भ किया। धीरे-धीरे, बढ़ते-बढ़ते राष्ट्रीय सोच तक पहुँचे। ऐसी बात नहीं है हमने एक राष्ट्रीय सोच का ही निर्माण किया उस राष्ट्रीय सोच में चलते चलते हम लोग शिक्षकों का काम करने लगे। याने राष्ट्रीय सोच यह 'बाई-प्रोडेक्ट' नहीं है, यह मूल है। उस सोच के अनुसार शिक्षा क्षेत्र में हम शिक्षकों को लेकर काम करते हैं।

हमारी जो राष्ट्रीय सोच है, स्वाभाविक ही राष्ट्रीय होने के नाते, जिस राष्ट्र की वो सोच है, उस राष्ट्र की पहचान की सारी विशेषताऐं उस सोच में निश्चित ही होगी। राष्ट्र की कोई बात है तो यह उसके स्वरूप में स्पष्ट झलकती है। वैसे ही हमारी भी सोच में झलकती है। सब लोग एक मर्यादा तक रहते हैं।

आज सभी अपने सुख के मार्ग देखते हैं और अपना सुख जब तक पूरा होता है तब तक उसके साथ रहते हैं। एक बार वो मुर्दा बन गया कि उसकी पत्नी भी कहती है, जो उसको प्राणनाथ-प्राणनाथ कह कर पुकारने वाली थी कि इसको रखा जाये या जल्दी जला दें, मेरा तो जो होना है सो हो ही गया। अब इस मुर्दे को लेकर मैं क्या करूँ। तो बात यह है कि अब यह मुर्दा बन गया है, पहले ये खाता पीता था, कमाता था, हमको देता था तब तक हम उसके थे, ऐसा आध्यात्म बोलता है। किसी न किसी स्तर पर जिन्दगी में